बौद्ध दर्शन- चार आर्य सत्य (Four Noble Truth)

By- Dr. Arun Kumar Sinha
Asso. Prfessor, Philosophy Department
Raja Singh College, Siwan

(For Part- 1 Hons./Subs. Students)

द्वितीय आर्य सत्य- दुखों का कारण भी है (There is a cause of suffering)

बुद्ध ने जिन बातों को समझने के लिए उचित तथा जीवन के लिए उपयोगी समझा उन्हें आर्य सत्य के नाम से संबोधित किया। आर्य सत्य नाम की सार्थकता पर प्रकाश डालते हुए चंद्र कृति ने कहा है कि "जिन शक्तियों को केवल आर्य ही समझते हैं उन्हें आर्य सत्य कहते हैं"। आर्य सत्य बुद्ध के संपूर्ण धर्म चक्र का आधार है ।जीवन के अनुभवों के आधार पर बुद्ध ने जो धर्म चक्र परिवर्तन किया उसके मूल में आर्य सत्य ही है ।

यह संसार दु:खमय है ऐसा जान लेने के पश्चात महात्मा बुद्ध ने अन्य भारतीय दार्शनिकों के तरह इसके कारण को जानने का प्रयास किया । उन्होंने दुख के कारण का विश्लेषण दूसरे आर्यसत्य में एक सिद्धांत के सहारे किया है इस सिद्धांत को प्रतीत्यसमुत्पाद (The Doctrine of Dependent Origination) कहा जाता है ।प्रतीत्यसमुत्पाद के अनुसार प्रत्येक विषय का कुछ ना कुछ कारण होता है अकारण कोई भी घटना उपस्थित नहीं हो सकती ।

अतः बुद्ध ने दु:ख की कारणों की एक लंबी श्रृंखला प्रस्तुत की उसके अंतर्गत उन्होंने 12 कारण बताए हैं, जो एक के बाद दूसरों के क्रम में देखे जाते हैं और इन्हें द्वादश निदान भी कहा जाता है :-

1. जरामरण
2. जति
3. भव
4. उपादान
5. तृष्णा
6. वेदना
7. स्पर्श
8. Shadayatan
9. नामरूप
10. विज्ञान
11. संस्कार

12. अविद्या

1. **<u>जरामरण</u>**- जरा मरण के अंतर्गत जीवन के सभी दुःख आ जाते हैं किंतु ये दुःख इसलिए होते हैं कि शरीर धारण किया जाता है ।यदि शरीर ना हो तो कोई कष्ट नहीं होगा ।अतः शरीर धारण करना या जन्म लेना ही जरामरण के कारण है जिसे बौद्ध दर्शन की भाषा में जाति कहते हैं
2. **<u>जाति</u>**- जन्म धारण भव के कारण होता है भव का अर्थ वसुबंधु के अनुसार पुनर्जन्म उत्पन्न करने वाले कर्म हैं मिस्टर राइस डेविस ने इसका अर्थ अस्तित्व की इच्छा बताया है ।
3. **<u>भव</u>**- जन्म की प्रवृत्ति (भव) उपादान अर्थात सांसारिक विषयों में लिप्त रहने की अभिलाषा के कारण होती हैं। उपादान के ये प्रकार हैं - काम उपादान अर्थात स्त्री में आसक्ति, शीलोपादान अर्थात व्रतों में आसक्ति तथा आत्मोपादान यानी आत्मा को नित्य समझने में आसक्ति।
4. **<u>उपादान</u>**- यह तृष्णा के कारण होते हैं स्पर्श आदि सुख प्राप्त करने के लिए इच्छा ही तृष्णा है।
5. **<u>तृष्णा</u>**- तृष्णा वेदना के कारण होती है।इन्द्रियों से जो बिभिन्न अनुभव प्राप्त होते हैं, वे ही वेदना हैं।
6. **<u>स्पर्श</u>**- वस्तुओं से सम्पर्क क्यों होते हैं । चूँकि पाँच इंद्रियाँ हैं और एक मन भी जिसे shadayatan कहते हैं ।
7. **<u>Shadayatan</u>**-यह नामरूप के कारण होता है।गर्भस्थ शरीर और मन यदि न हो तो shadayatan नहीं होगा।गर्भावस्था जो शरीर का रूप होता है वह और मन न हो, जिसे नामरूप कहते हैं, तो shadayatan नहीं होगा।
8. **<u>नामरूप</u>**- विज्ञान अर्थात चेतना के कारण नामरूप होता है।चेतना के कारण ही नामरूप की वृद्धि होती है।
9. **<u>विज्ञान</u>**- विज्ञान संस्कार होता है।
10. **<u>संस्कार</u>**- पूर्वजन्म के कर्मों का प्रभाव जो वर्तमान जीवन तक आता है उसे संस्कार कहते हैं।
11. **<u>अविद्या</u>**- संस्कार यथार्थ के अभाव के कारण होता है।यथार्थ ज्ञान का अभाव ही अविद्या है।

इस तरह यह कहा जा सकता है कि सभी दुःखों का कारण अविद्या से जरामरण आदि

बारह कड़ियाँ हैं जिनमें से कुछ का सम्बंध पूर्व जन्म से है तथा कुछ का सम्बंध भबिष्य जीवन से है जैसे अविद्या और संस्कार का संबंध पूर्व जीवन से है तो जाति और जरामरण का संबंध भविष्य जीवन से है। भव अर्थात संसार की सभी गतिविधियों का आधार भी यही हैं अतः इन्हें 'भवचक्र' भी कहा जाता है। इस भवचक्र में बुद्ध ने यह स्वीकार किया है कि जन्म धारण करने के इच्छा के कारण ही जन्म होता है।

महात्मा बुद्ध के प्रतीत्यसमुत्पाद सिद्धान्त की आलोचना भी की गई है जिनमें से कुछ प्रमुख आलोचना निम्न प्रकार से है :-

इस सिद्धांत के प्रति सामान्य तौर यह जाना जाता है कि यह बुद्ध की मौलिक विचार हैं परन्तु आलोचकों का कहना है कि यह सिद्धांत बुद्ध का निजी देन नहीं है बल्कि यह उपनिषद दर्शन के 'ब्रम्ह-चक्र' की नकल है।बुद्ध का यह सिद्धांत मौलिकता साबित करने में असफल प्रतीत होता हुआ नजर आता है।

बुद्ध ने प्रत्येक निदान का कारण तो दिया है परन्तु अविद्या का कारण क्या है ? इसे बतानेमें असफल रहे हैं।इस प्रश्न के उत्तर देने में बुद्ध मौन रह जाते हैं ,यह दार्शनिक दृष्टि से अमान्य सा लगत लगता है।

इस सिद्धांत कुछ आलोचनाएं हुई हैं फिर भी बोद्ध दर्शन में इसका महत्व दिया गया है। प्रतीत्यसमुत्पाद से कर्मवाद की स्थापना होती है। प्रतीत्यसमुत्पाद से अनित्यवाद की स्थापना होती है। प्रतीत्यसमुत्पाद का सिद्धांत बोद्ध-दर्शन मैं अनात्मवाद (The theory of No-Self) भी स्थापना करने में सहायक है।